झांकी हिन्दुस्तान की

इन्दु पाराशर

H
028.5 P 886 J

028.5
P886J

INDIAN INSTITUTE OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY SHIMLA

Indu Prakashar

झांकी हिन्दुस्तान की

इन्दु पाराशर

Jhanki Hindustan ki

Rastrabhasa Prakashan Delhi

राष्ट्रभाषा प्रकाशन दिल्ली-110032

CATALOGUED

H
028.5
P886J

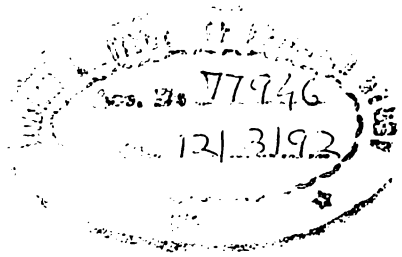

Library IIAS, Shimla
H 028.5 P 886 J
00077946

© प्रकाशक

प्रकाशक :
राष्ट्रभाषा प्रकाशन,
518/6-बी, विश्वास नगर,
शाहदरा, दिल्ली-110032

संस्करण : 1990 मूल्य 10 .00

मुद्रक :—
एलोरा प्रिन्टर्स, विश्वास नगर, दिल्ली—110032

दो शब्द

भारत बहुत विशाल देश है। अपने देश के बारे में हर कोई जानना चाहता है। परन्तु साधारण पढ़े-लिखे ही नहीं, विद्वान् और शिक्षित कहे जाने वाले भी भारत से पूरी तरह परिचित नहीं हैं।

'झांकी हिन्दुस्तान की' का एक छोटा-सा प्रयास इसी दिशा में है। बहुत थोड़े से विवरणों द्वारा भारत के सभी प्रदेशों तथा संघीय क्षेत्रों की जानकारी जुटाई है।

भारत एक है—इस एकता को पक्का करने के लिए हमें विशाल भारत के अन्य प्रदेशवासियों के बारे में जानकारी रखनी चाहिए। प्राचीन समय में तीर्थयात्रा द्वारा यह जानकारी जुटाई जाती थी। तीर्थयात्रा ने इसी कारण धार्मिक रूप लिया था।

अब यातायात के तेज साधन सबको उपलब्ध हैं। इस कारण सबके मन में देश-दर्शन की आकांक्षा होनी चाहिए।

सरल-सुबोध भाषा में लिखी यह पुस्तक बालकों, प्रौढ़ों तथा नवसाक्षरों का ज्ञानवर्धक करेगी। ऐसी मेरी इच्छा है।

—इन्दु पराशर

भारत के राज्य

हमारा भारत एक बड़ा देश है। इसमें बड़े-छोटे कई राज्य और संघीय क्षेत्र हैं। राज्यों में प्रदेश की सरकार का शासन होता है परन्तु संघीय क्षेत्र में भारत सरकार का शासन होता है।

हमारे देश के उत्तरी क्षेत्र में जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा तथा उत्तर प्रदेश राज्य हैं तथा चण्डीगढ़ और दिल्ली संघीय क्षेत्र हैं। पूर्वी क्षेत्र में बिहार, बंगाल, सिक्किम, असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय और त्रिपुरा, बड़े-छोटे राज्य और संघीय प्रदेश हैं। मध्य क्षेत्र में ओडिसा, मध्य प्रदेश तथा महाराष्ट्र राज्य हैं। दक्षिण में आन्ध्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल राज्य तथा गोआ और पाण्डिचेरी संघीय प्रदेश हैं।

हमारे द्वीप समूह भी दक्षिण में हैं जो कि केन्द्र द्वारा शासित हैं। बंगाल भारत की खाड़ी में अंडमान निकोबार द्वीप समूह तथा अरब सागर में लक्षदीव द्वीप समूह हैं। पश्चिमी में गुजरात और राजस्थान राज्य तथा दादरा और नगर हवेली संघीय क्षेत्र हैं। इन सभी राज्यों और क्षेत्रों से मिलकर भारत बना है।

भारत के सभी राज्य और संघीय क्षेत्रों की अपनी-अपनी एक राजधानी है। राजधानी राज्य या क्षेत्र के मुख्य नगर को बनाया जाता है और वहां राज्य सरकार के दफ्तर होते हैं। भारत की राजधानी दिल्ली है; यह सारे देश की राजधानी है। हमारे देश में बहुत से बड़े-बड़े और सुन्दर नगर हैं।

भारत एक सुन्दर और सुहावना देश है। इसमें बहुत-सी नदियां, झीलें व सरोवर हैं। ऊंचे-ऊंचे पर्वत और पहाड़ियां भी हैं। घने और गहरे जंगल और वन भी हैं। भारत के तीन ओर समुद्र है; इस कारण भारत का समुद्र

तट भी लम्बा है।

यहां धरती के अन्दर सब प्रकार के खनिज मिलते हैं। खेतों में हर तरह की फसलें उपजती हैं। वृक्षों पर भिन्न-भिन्न मीठे फल उगते हैं। तरह-तरह के फूल खिलते हैं। देश में सैकड़ों बड़े-बड़े तथा हजारों छोटे कारखाने हैं। देश-भर में हाथ से दस्तकारी का सामान बनता है। इस तरह सैकड़ों प्रकार के काम धन्धे और हजारों वस्तुएं देश में उत्पन्न होती हैं।

हमारे देश के भिन्न-भिन्न राज्यों में रहने वाले लोगों के जीवन में भी भिन्नताएं हैं। खाने-पहनने के भिन्न-भिन्न ढंग हैं, अन्न-दाना भी भिन्न-भिन्न पैदा होता है। क्योंकि हमारे लम्बे-चौड़े देश में भिन्न-भिन्न मौसम और जलवायु हैं। हमारे देश में भिन्न-भिन्न बोलियां, भाषाएं तथा रस्म-रिवाज हैं। इसी प्रकार हमारे पर्व, त्यौहार तथा उत्सव भी भिन्न-भिन्न हैं।

लेकिन कुछ बातें ऐसी हैं जो हमें एक सूत्र में बांधती हैं और हमें एकता में रखती हैं। हम सब भारतवासी एक ही धरती पर रहते हैं। हमारे विचार सामान हैं। पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण हमारे व्यवहार एक से हैं। हमारे काम करने का ढंग एक समान है। हमारे संकल्प, प्रार्थना, आराधना समान हैं। हमारे आचरण समान हैं।

उत्तरी क्षेत्र : जम्मू-कश्मीर

अब हम देश की झांकी यात्रा करेंगे। हमारे देश का सबसे सुन्दर प्रदेश जम्मू-कश्मीर है। जम्मू तक रेल जाती है। आगे श्रीनगर और लेह सड़क द्वारा जुड़े हैं। जम्मू-कश्मीर हिमालय की विशाल घाटियों में बसा है। जम्मू के इलाके में वीर डोगरे रहते हैं जो बहादुरी के लिए प्रसिद्ध हैं। जम्मू एक बड़ा नगर है और यहां रघुनाथ जी का भव्य मन्दिर है।

श्रीनगर के लिए जम्मू से सड़क मार्ग है। रास्ते में दोनों तरफ घने पेड़ हैं—सड़क संकरी और पहाड़ों में से जाती है। एक तरफ पहाड़ ऊंची दीवार

की तरह हैं और दूसरी ओर गहरी भयानक खाइयां हैं। खाई में उछलती-कूदती नदी तेजी से आगे दौड़ रही है। अपने पक्के इरादों से उसने पत्थरों में भी मार्ग बना लिया है। इस प्रकार हम भी पक्के इरादे से उन्नति कर सकते हैं।

कश्मीर की एक झील

अब ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों में से सड़क जा रही हैं। वर्षा ऋतु में कई बार चट्टानें तथा पेड़ भी सड़क पर गिर जाते हैं। शीत ऋतु में इन मार्गों पर बर्फ गिरती है। बर्फ रुई जैसे टुकड़ों में गिरती है और नीचे जम जाती है। तब रास्ते बंद हो जाते हैं। पहाड़ियां, जंगल, मकान सब बर्फ की चादरें ओढ़ लेते हैं। ऐसी सुन्दर धरती में कश्मीर बसा है।

पहाड़ी ढलानों पर भैंस, गाय, भेड़-बकरियां मजे से चर रही हैं। पास ही गूजर चरवाहे अपना काम कर रहे हैं। इधर पहाड़ों के अन्दर सुरंग में से सड़क जाती है। सुरंग के पश्चात् कश्मीर की सुन्दर घाटी के दर्शन होते हैं। यहां हरे-भरे, लहलहाते खेत हैं तथा कई झीले हैं। श्रीनगर इसी घाटी में

बसा है।

कश्मीर में कड़ाके की सर्दी पड़ती है इस कारण लोगों को घर के अंदर ज्यादा समय रहना पड़ता है, तब यह मेहनती लोग घर में बैठकर तरह-तरह के दस्तकारी के काम करते हैं। कश्मीरी कढ़ाई के शाल, चांदी के नक्काशी वाले बर्तन बहुत मशहूर है। यहां लकड़ी पर बारोक सुन्दर खुदाई का काम भी होता है। बेंत की सुन्दर वस्तुएं भी बनती हैं।

कश्मीर के लोग कद के ऊँचे और गोरे रंग के होते हैं। यहां स्त्री-पुरुष सब मिलते-जुलते ढ़ीले-ढाले कपड़े पहनते हैं। शीत ऋतु में घर तथा बाहर जलती आग की कांगड़ी साथ में रखते हैं। गर्मी के दिनों में यहां जलवायु बहुत सुहावना हो जाता हैं। वृक्ष फूलों से भर जाते हैं। देश के निचले गरम प्रदेशों से लोग यात्रा पर आंते हैं।

गर्मी के दिनों कश्मीर की शोभा और भी बढ़ जाती है। भारत के हर प्रदेश के लोगों का यहां जमघट, मेला जैसा लग जाता है। यहां की बड़ी-बड़ी झीलों में लोग सैर करते हैं तथा नावों में बने मकानों में रहते हैं। इन दिनों यहां के तीर्थों पर भी यात्री आते हैं। जम्मू के पास वैष्णो देवी का मन्दिर तथा श्रीनगर से कुछ दूर लोग अमरनाथ के दर्शन करने आते हैं।

श्रीनगर से सड़क मार्ग लेह को जाता है। यह लद्दाख का बड़ा शहर है। यहां विश्व का सबसे ऊंचा हवाई अड्डा है। लद्दाख का इलाका पठारी है। यहां सूर्य की गर्मी से बिजली पैदा की जाती है। भारत की महान सिंधु नदी इसी पठार में से होकर भारत में मुड़ती है।

लद्दाख के वासी बौद्ध धर्म को मानते हैं। कश्मीर में मुसलमान अधिक संख्या में हैं, जम्मू में हिन्दू अधिक हैं। यह सब भिन्न धर्मों को मानने वाले आपस में भाई-भाई की तरह रहते हैं।

हिमाचल प्रदेश

जम्मू-कश्मीर के पहलू में भारत का दूसरा पर्वतीय राज्य हिमाचल प्रदेश है। यह भी हिमालय की गोद में बसा हुआ है। इस प्रदेश में से ही भारत की सतलुज, ब्यास और रावी नदियां बहती हैं। सतलुज तिब्बत में से होकर हमारे देश में बहती है। सतलुज पर ही विश्व का सबसे ऊँचा बांध 'भाखड़ा बांध' बना है, जो हिमाचल प्रदेश में है।

हिमाचल प्रदेश का नटी नृत्य

हिमाचल प्रदेश का जलवायु और लोगों का जीवन जम्मू-कश्मीर जैसा ही है। यहां भी कुल्लु, कांगड़ा और शिमला की सुन्दर घाटियां हैं। यहां के दृश्य भी बहुत सुन्दर और सुहावने हैं। मनाली, धर्मशाला, डलहौजी, शिमला, कसौली आदि यहां के दर्शनीय शहर हैं। गरमी की ऋतु में यहां पर सैर-सपाटे के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं।

कुल्लु का दशहरा बहुत प्रसिद्ध है। इस दशहरे में हर गांव से ग्राम देवता की सवारी आती है। लोग मस्ती में नाचते हैं। यहां का नटी-नृत्य बहुत लुभावना है जिसमें स्त्री-पुरुष बड़े चाव से भाग लेते हैं।

वन यहां की सम्पदा है। बड़े-बड़े बागों में सेब मिलते हैं जो कि सारे भारतवर्ष में बिकते हैं। यहां पानी से बिजली पैदा करने वाले बहुत-से बिजली घर चलते हैं और बनाए जा रहे हैं। व्यास नदी के पानी को बांधों द्वारा सतलुज नदी में पहुंचाने की बड़ी योजना पूरी हो गई है। इस योजना में भी पानी से बिजली घर चलाए जा रहे हैं।

शिमला इस राज्य की राजधानी है। हिमाचल में तंग पटरी की रेल-गाड़ी कालका से शिमला तक तथा पठानकोट से जोगिंदर नगर तक चलती हैं। यहां से पहाड़ों में से सड़क मार्ग लद्दाख में लेह और उत्तर प्रदेश में मसूरी आदि स्थानों तक बने हैं।

हिमाचल में ऊपर की ओर खूब बर्फ पड़ती है। यहां भी लद्दाख की तरह ऊपर के इलाकों में बौद्ध धर्म को मानने वाले लोग रहते हैं। कुल्लु, कांगड़ा और शिमला आदि में हिन्दुओं का बहुमत है जो डोगरा राजपूत हैं।

हिमाचल प्रदेश सुहावने, रमणीक दृश्यों से भरपूर है। लोग मेहनती और कुशल हैं। यहां के शाल, पशमीना तथा घडियां प्रसिद्ध हैं। नाहन और परवानु यहां का प्रमुख औद्योगिक नगर है।

पंजाब

उत्तरी क्षेत्र के जम्मू-कश्मीर तथा हिमाचल के नीचे विशाल और समतल मैदान हैं। यहां पहाड़ों का नाम नहीं। चारों तरफ बड़े-बड़े खेत हैं। सीधी, चौड़ी सड़कें हैं। यह पंजाब की धरती है। यहां छोटे-छोटे गांव और बड़े-बड़े शहर और व्यापार केन्द्र हैं। कई स्थानों पर बड़े-बड़े कारखाने भी हैं।

पंजाब वीरों की धरती है। हमारे देश में बाहर से लोग युद्ध और लूट-पाट करने आते थे। उन बाहरी लोगों को हमारे देश का धन-दौलत ललचाता था। तब भारतवासी अपने देश की रक्षा के लिए मैदान में उतरते थे। वह युद्धभूमि कौन-सी थी ? वह धरती थी पंजाब की।

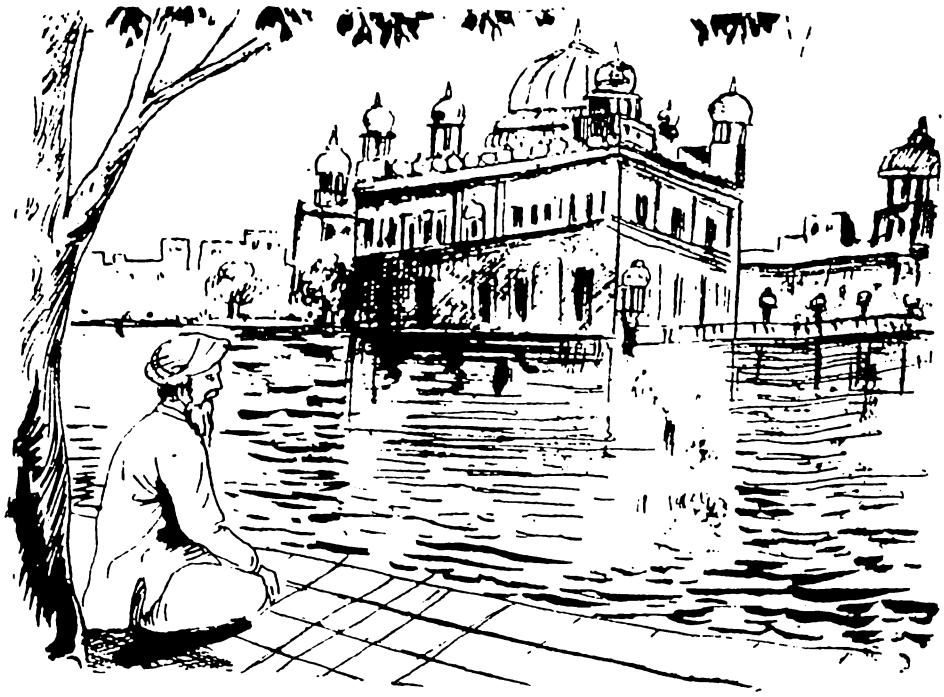

अमृतसर का हरमंदिर साहब

इस वीर धरती पर सिख योद्धाओं का बोलबाला था। सिख हिन्दुओं का योद्धा रूप है। क्षत्री गुरु का अमृत चखकर वीर योद्धा बनते थे। गुरुओं ने हमें मार्ग दिखाया-धर्म की रक्षा का। देश और धर्म के लिए योद्धा मैदान में उतरते थे। हमारे गुरुओं का बड़ा स्थान अमृतसर का हरमन्दिर साहब है। इसे स्वर्ण मन्दिर गुरुद्वारा भी कहते हैं।

पंजाब के मैदानी प्रदेश में वर्षा, कम होती है। गरमी बहुत पड़ती है। धरती उपजाऊ है परन्तु जल की कमी के कारण पूरा लाभ नहीं मिलता। सिंचाई के लिए नदियों पर बड़े-बड़े बांध बनाये गए हैं। उनसे नहरें निकाली

भांगड़ा नाचते हुए

गई हैं। नहरों की दीवारें भी पक्की ईंट और सीमेंट से बनाई गई हैं। इस पानी को खेतों में छोड़ा जाता है। इस प्रकार यहां नहरों का जाल बिछा है।

पंजाब में नहरों से लाखों खेतों को पानी पहुंचाया जाता है। यहां नहरों द्वारा सिंचाई से, अच्छे बीज और खाद के प्रयोग से भरपूर फसलें हो रही हैं। यहां गेहूं, चावल, कपास आदि सब प्रकार के अनाज पैदा होते हैं। अब तो तीन-तीन फसलें उगाई जा रही हैं, इस कारण पंजाब देश का अन्न भण्डार बन गया है। जहां-जहां नहरें नहीं पहुंच सकीं वहां कुएं और नलकूप भी लगे हैं।

धनधान्य से भरपूर पंजाब में लोहड़ी (मकर संक्रांति), बैसाखी, दशहरा, दीवाली बहुत उत्साह से मनाये जाने वाले त्यौहार हैं। पंजाब का लोक-नृत्य भांगड़ा सारे देश में प्रसिद्ध है। यह नृत्य बहुत जोशीला और फुर्तीला होता

है। मस्ती में झूमते, नाचते भांगड़ा अब हर शुभ अवसर का एक अंग है। इसी प्रकार पंजाब के लोक-गीत वीर रस से पूर्ण हैं।

हरियाणा

पंजाब के पड़ोस में हरियाणा प्रदेश भी मैदानी है। इसमें कुछ इलाके रेतीले और पहाड़ी भी हैं। यहां रहन-सहन खेती-बाड़ी आदि पंजाब की तरह ही है। केवल भाषा का फर्क है जो पंजाब में पंजाबी है और हरियाणा में हिंदी बोली जाती है।

यहां भी आजकल नहरों, नलकूपों और कुओं से सिंचाई होती है। यहां हर गांव में बिजली और सड़क पहुंच चुकी है। यहां भी गेहूं, चावल, मक्का, बाजरा आदि फसलें पैदा होती हैं। देश में अन्न भण्डार भरने वाला दूसरा प्रदेश भी हरियाणा है।

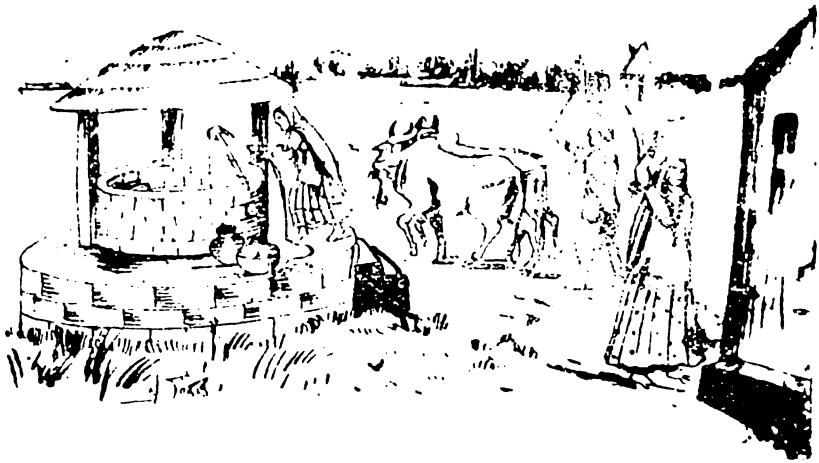

हरियाणा के एक गांव की झांकी

हरियाणा गांवों का प्रदेश है। इस प्रदेश में बड़े-बड़े शहर अधिक नहीं हैं। हरियाणा का गांव बहुत सीधा सादा होता है। पनघट और हल जोतते किसान इधर के साधारण दृश्य हैं। यहां बढ़िया नस्ल के पशु पाले जाते हैं,

इस कारण हरियाणा में खूब घी-दूध भी होता है। यहां पशुओं के बड़े मेले लगते हैं। यहां से दूधारू पशु दूसरे प्रदेशों में भी भेजे जाते हैं।

पंजाब की तरह इस प्रदेश में भी छोटे-छोटे बहुत उद्योग हैं। यहां का हथकरघा उद्योग प्रसिद्ध है। यहां फरीदाबाद, सोनीपत, बहादुरगढ़ और धारुहेडा में बड़े-बड़े कारखाने भी खुल गये हैं जिनमें ट्रैक्टर, मशीनें, साईकल, स्नानघर का सामान और कागज बनाया जाता है।

हरियाणा में प्रसिद्ध तीर्थ स्थान भी हैं। यहां प्राचीन सरस्वती नदी बहती थी। उसके किनारे बड़े-बड़े आश्रम, वन, व्रज और सरोवर होते थे। कुरुक्षेत्र उसी नदी के किनारे है, जहां महाभारत का युद्ध लड़ा गया था। पानीपत और तिरावडी भी इतिहास-प्रसिद्ध युद्ध के मैदान थे। इस कारण हरियाणा में अब भी वीर योद्धा जाट जाति ही प्रमुख है।

चण्डीगढ़ हरियाणा में एक नया विशाल शहर है। यह शहर पहले पूरे पंजाब की नई राजधानी था। परन्तु हरियाणा राज्य बनने से अब इस पर किसी का अधिकार नहीं रहा। अब यह केन्द्र सरकार का संघीय क्षेत्र है। परन्तु पंजाब और हरियाणा दोनों की राजधानी चण्डीगढ़ हीं है।

उत्तर प्रदेश

उत्तर क्षेत्र में सबसे बड़ा प्रदेश उत्तर प्रदेश है। भारत में सबसे अधिक जनसंख्या वाला प्रदेश भी यही है। इस प्रदेश में ही हमारी दो बड़ी नदियां गंगा और यमुना बहती हैं। इस प्रदेश की भाषा हिंदी है और राजधानी लखनऊ है।

उत्तर प्रदेश का उत्तराखण्ड वाला इलाका हिमालय में है। यहां से गंगा और यमुना निकलती हैं। यहां ऊंचे-ऊंचे पहाड़ हैं जिन पर सारा साल बर्फ जमी रहती है। गंगा में ऊपरी हिमालय की बर्फ का पिघला पानी आता है जिस कारण यह जल कभी खराब नहीं होता। उत्तराखण्ड में हमारे पुराने

तीर्थ-स्थान हैं। जिनमें बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री बहुत प्रसिद्ध हैं। कुमाऊं और दून घाटी की बहुत ही सुन्दर घाटियां इसी उत्तराखंड में हैं। अल्मोड़ा, नैनीताल, मसूरी आदि सुन्दर नगर भी इन्हीं पहाड़ियों और घाटियों में हैं।

इन सुन्दर स्थानों पर दूर-दूर से पर्यटक, तीर्थयात्री सारा वर्ष आते रहते हैं। हरिद्वार, ऋषिकेश, काठगोदाम आदि स्थान उत्तराखण्ड के नीचे वाले इलाके के प्रसिद्ध नगर हैं। हरिद्वार तो गंगाजी के कारण हिन्दुओं का बहुत बड़ा तीर्थ है। विश्वप्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यान कार्बेट पार्क भी इसी खंड में है। यहां घने-घने जंगल और फलों के बाग भी हैं।

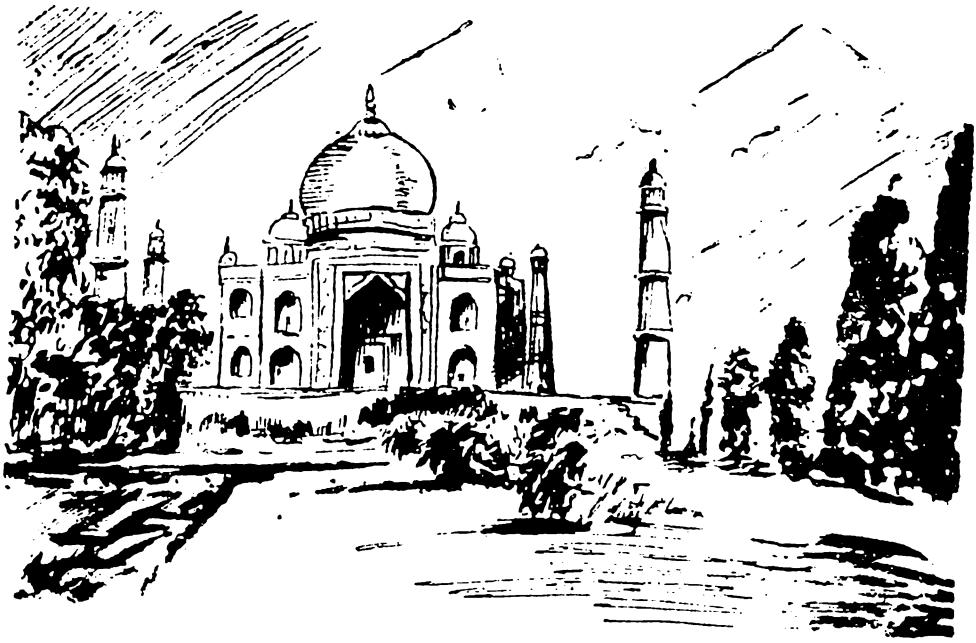

ताजमहल आगरा

उत्तर प्रदेश में नदियों पर विशाल बांध बनाकर नहरें निकाली गई हैं। यह नहरें गंगा, यमुना नदियों के दोनों ओर दूर-दूर तक फैली हैं। यहां की धरती बहुत उपजाऊ है इस कारण हर प्रकार की उपज होती है। गंगा, यमुना की सहायक नदियों पर भी बांध बनाकर नहरें निकाली गई हैं। अब यमुना,

गंगा और राम गंगा पर बहुधंधी बांध-बांधकर बिजली और नहरें निकालने की योजनाओं पर काम हो रहा है। उत्तराखण्ड के नीचे विशाल मैदानी इलाका है। दक्षिण की ओर झांसी और बुंदेलखण्ड का पठारी इलाका है। इस मैदानी इलाके में लाखों खेत और हजारों गांव हैं। कई इतिहास-प्रसिद्ध प्राचीन नगर और सैकड़ों शहर बसे हैं। इन सबको छोटी-बड़ी बीसियों नदियों से पानी मिलता है। इस विशाल मैदान में रेल और सड़कों का जाल बिछा पड़ा है। यह विशाल मैदान गंगा-यमुना की सहायक नदियों की गाद से धीरे-धीरे बना है, इस कारण यह मैदान विश्व का प्रसिद्ध उपजाऊ क्षेत्र है।

उत्तर प्रदेश की वेषभूषा

उत्तर प्रदेश के इतिहास-प्रसिद्ध नगरों में सबसे प्राचीन नगर अयोध्या, हस्तिनापुर, मथुरा, प्रयाग और काशी हैं। अन्य इतिहास-प्रसिद्ध नगर कन्नौज, कोशांबी, आगरा, जौनपुर आदि हैं। गंगा-यमुना के किनारे प्राचीन तीर्थ भी हैं, इनमें हरिद्वार, गढ़गंगा, प्रयाग और वाराणसी बहुत प्रसिद्ध हैं। प्रयाग पर विश्वप्रसिद्ध मेला लगता है। यहां सारा वर्ष यात्री त्रिवेणी संगम पर आते हैं। यहां आनन्द भवन भी है जहां हमारे देश के पहले प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू रहते थे।

हरिद्वार पर भी कुम्भ मेला बैठता है। यह हमारी प्राचीन शिक्षा की नगरी भी है। यहां गुरुकुल कांगड़ी है। वाराणसी भी शिक्षा का केन्द्र है।

यहां पर संस्कृत पढ़ाने की प्राचीन पाठशालाएं हैं। यहां काशी विश्वविद्यालय तथा संस्कृत कालेज भी है। यहां का भगवान् शिव का विश्वानथ मन्दिर भारत में सबसे प्रसिद्ध मन्दिर है। सारनाथ वाराणसी के पास ही है जहां महात्मा बुद्ध ने अपना पहला उपदेश देकर धर्मचक्र चलाया था। सारनाथ में चार शेरों वाला अशोक स्तम्भ है, जिसका चित्र हमारे देश की सरकारी मोहर है।

भगवान बुद्ध की उपदेश मूर्ति

मथुरा भी विद्या का केन्द्र और बड़ा तीर्थ है। यहां भगवान् कृष्ण का जन्म हुआ था। वृन्दावन में भगवान् कृष्ण का बचपन बीता था इस कारण यह पावन क्षेत्र भी है। मथुरा के पासही आगरा बसा है जहां प्रसिद्ध ताजमहल और लालकिला है आगरा के पास फतहपुर सीकरी और अकबर बादशाह का मकबरा भी है।

उत्तर प्रदेश की धरती पर ही महाभारत और रामायण के नायक जन्मे थे। भगवान् राम का जन्म अयोध्या में हुआ था। राम-कथा की तरह अयोध्या भी प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। हस्तिनापुर कौरव-पाण्डवों की राजधानी थी जो गंगा के किनारे पर है।

कानपुर इस राज्य का सबसे बड़ा उद्योग नगर है। यह प्रदेश का सबसे बड़ा शहर भी है। यहां बड़े-बड़े कारखाने हैं। हापुड़ उत्तर प्रदेश की ही नहीं, भारत की अनाज की सबसे बड़ी मण्डी है। मुजफ्फर नगर भारत की सबसे बड़ी गुड़ और चीनी की मण्डी है। फिरोजाबाद कांच के सामान का केन्द्र है। लखनऊ नबाबी समय के इमाम वाड़ों तथा प्रदेश की राजधानी के कारण प्रसिद्ध है।

यहां लोग बहुत धार्मिक और सीधेसादे हैं। उत्तराखण्ड को छोड़ बाकी प्रदेश में गर्मी बहुत पड़ती है। स्त्रियां धोती ब्लाउज पहनती हैं और पुरुष धोती-कुर्त्ता पहनते हैं। यहां के लोग हर प्रकार का त्यौहार मिल-जुलकर मनाते हैं। ईद और होली पर मंगल-मिलन मनाया जाता है। लखनऊ का मुहर्रम बहुत प्रसिद्ध है।

दिल्ली

हमारा देश बहुत बड़ा और विशाल देश है। हमारे देश में लाखों गांव और शहर हैं। यदि एक गांव और शहर देखने के लिए एक दिन लगायें तो एक व्यक्ति को तीन सौ वर्ष लगेंगे। हमारे देश में कई धर्म-मत के लोग रहते हैं। सैकड़ों वर्षों से हम इकट्ठे रह रहे हैं। क्योंकि भारत हमारा देश है और हम भारतीय हैं।

दिल्ली हमारे देश की राजधानी है। सारे भारत का यह छोटा रूप है। भारत के सब धर्म-मत के लोग दिल्ली में रहते हैं। सबके अपने-अपने पूजा-स्थान और समाज-संस्थाएं हैं। विदेशों से भी लोग दिल्ली में दूत भेजते

हैं। इस प्रकार दिल्ली में सारे विश्व के वासी भी मिलते हैं। दिल्ली भारत का दिल है। यहां से केन्द्र सरकार की बात सारा देश सुनता है। विश्व के बड़े-बड़े देश भी हमारी बात सुनते हैं।

यहां हमारा संसद भवन है। यहां हम अपने लिए कानून बनाते हैं और अपना शासन तय करते हैं। सारे देश से चुने हुए प्रतिनिधि संसद में आते हैं। उन प्रतिनिधियों से जिन्हें लोक-सभा, राज्य-सभा सदस्य कहा जाता है, मंत्री चुने जाते हैं। इस तरह सारे भारत पर शासन चलता है।

यहां हमारे राष्ट्रपति भी रहते हैं। उनके नाम पर सारे देश की सरकार चलती है। जहां राष्ट्रपति रहते हैं उस स्थान को राष्ट्रपति भवन कहते हैं। राष्ट्रपति हमारे सबसे माननीय व्यक्ति होते हैं। प्रधानमन्त्री सारे देश का शासन विधान के अनुसार चलाते हैं। आजकल श्री राजीव गांधी हमारे प्रधानमन्त्री हैं। श्री जैल सिंह हमारे राष्ट्रपति हैं।

दिल्ली में राजघाट है जहां राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की समाधि है। वैसे भी दिल्ली प्राचीन शहर है। महाभारत के समय इसका नाम इन्द्रप्रस्थ था। यहां लालकिला और जामा मस्जिद हैं। इन दोनों को शाहजहां ने बनवाया था।

दिल्ली देश का बड़ा नगर है। यहां बड़ी-बड़ी सड़कें हैं। यह रेल का भी केन्द्र है। यहां भारत का बड़ा हवाई अड्डा भी है। यहां से विश्व के बड़े देशों को हवाई जहाज जाते हैं। भारत के प्रमुख समाचार-पत्र दिल्ली से छपते हैं। यहां आकाशवाणी का बड़ा रेडियो स्टेशन है। यहां से दूर-दर्शन प्रसारण भी होता है, जो सारे देश में देखा जाता है।

दिल्ली में हजारों पर्यटक आते हैं। यहां पर प्राचीन कुतुबमीनार है। मीनार के पास ही प्रसिद्ध लोहे का खम्भा है जिसे जंग नहीं लगता। यह हमारी प्राचीन कारीगरी का कमाल है। दिल्ली में २६ जनवरी की सबसे बड़ी परेड होती है। इस परेड में देश के हर राज्य के लोक-नर्तक आते हैं तथा झांकियां निकलती हैं। इस अवसर पर लाखों लोग इकट्ठे होते हैं।

दिल्ली में १५ अगस्त को प्रधानमन्त्री लालकिले पर राष्ट्रीय ध्वज

फहराते हैं। इसके बाद देश के लोगों के लिए उनका भाषण होता है। इसी तरह २ अक्तूबर राजघाट पर गांधी जयंती मनाई जाती है। वहां गांधीजी की समाधि पर हजारों लोग फूल चढ़ाते हैं। पास ही नेहरू जी, इन्दिरा जी, और शास्त्री जी की समाधि भी है। नेहरू जी की समाधि का नाम शांतिवन है। शास्त्री जी की समाधि का नाम विजय घाट है। यह स्थान लालकिले के ठीक पीछे यमुना तट पर है।

दिल्ली में बड़े-बड़े कल-कारखाने भी हैं। कपड़े की मिलें भी हैं। छोटे उद्योग और हाथी दांत की दस्तकारी का काम बहुत बढ़ियां होता है। यह व्यापार का बहुत बड़ा केन्द्र है। यातायात का बहुत बड़ा अड्डा भी है। यहां बड़े-बड़े बाग हैं। १९८२ में यहां एशियाई खेल खेले गए थे।

पूर्वी क्षेत्र

पूर्वी क्षेत्र में गंगा का निचला तथा ब्रह्मपुत्र का मैदान है। उत्तर और पूर्व में हिमालय की श्रृंखलाएं भी हैं। हिमालय यहां ज्यादा ऊंचा नहीं है। इस कारण हिमालय की बरफ वाली चोटियां इधर कम ही हैं। पूर्वी भारत में शीत ऋतु में हिमालय वाले क्षेत्र में बरफ पड़ती है। ऐसा क्षेत्र बंगाल का दार्जिलिंग और सिक्किम है। पूर्वी भारत की झांकी बिहार से आरम्भ होती है।

बिहार

पूर्व में बिहार सबसे बड़ा प्रदेश है। भारत में जनसंख्या में यह प्रदेश दूसरा है। इस प्रदेश में छोटा नागपुर का पठारी इलाका और गंगा का निचला मैदान है। बिहार की पठारी भूमि में जंगल और घने वन हैं। इनमें आदिवासी लोग रहते हैं जिनको संथाल कहते हैं। संथाल आदिवासी उड़ीसा, मध्य

प्रदेश, बंगाल की पठारी भूमि पर भी फैले हैं।

इस पठारी प्रदेश में धातु-खनिजों के भण्डार हैं। इन खानों से अभ्रक, बाक्साइट, मैगनीज, लोहा, तांबा, कोयला आदि निकाला जाता है। बिहार की झरिया की खानें सबसे प्रसिद्ध हैं। यहां के लोगों का मुख्य पेशा खान-मजदूरी है। इन खनिजों से इस्पात बनाने के बड़े-बड़े कारखाने जमशेदपुर और बोकारो में हैं। इस इस्पात से बड़ी-बड़ी मशीनें, मोटर गाड़ियां आदि बनाये जाते हैं। इन वस्तुओं के कारखाने जमशेदपुर और रांची में हैं।

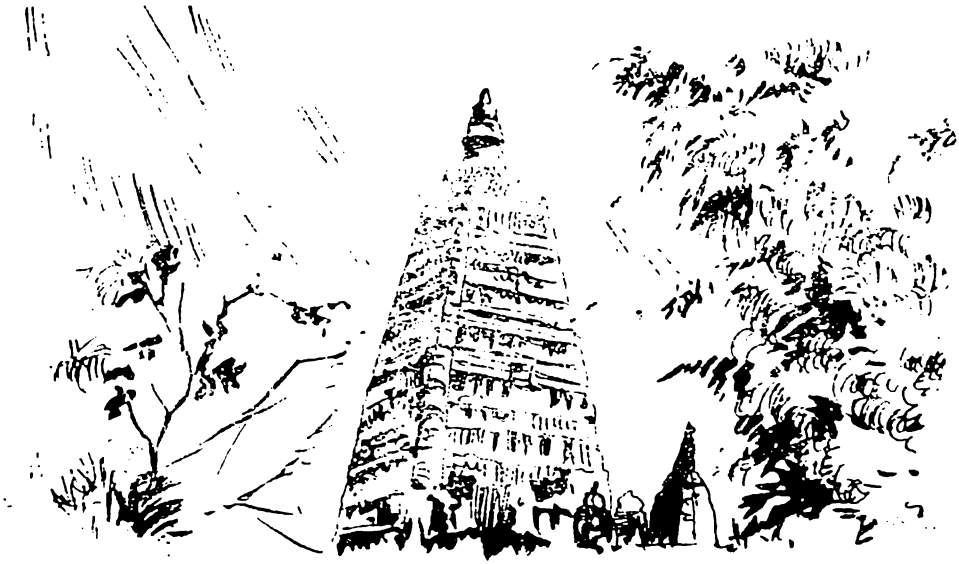

बौद्ध गया का मंदिर

बिहार का मैदानी इलाका उत्तर में है। यह गंगा और उसकी सहायक नदियों द्वारा बना समतल मैदान है। यह बहुत उपजाऊ है। यहां नदियों में अक्सर बाढ़ आती है। परन्तु फसल इतनी भरपूर होती है कि बाढ़ की हानि समझी ही नहीं जाती। यहां धान, मक्का, गेहूं, गन्ना और दालें मुख्य फसलें हैं। इधर पटसन की पैदावार बढ़ रही है।

बिहार की राजधानी पटना है। यह भारत का बहुत पुराना शहर है। इसका पुराना नाम पाटलिपुत्र था। यहां चन्द्रगुप्त और अशोक जैसे सम्राटों ने राज्य किया था। यहां की भाषा हिन्दी है। यहां की भोजपुरी और मैथिली

साहित्यिक बोलियां हैं। यहां प्राचीन प्रमुख तीर्थ भी हैं।

बौद्ध गया बौद्ध-धर्म के मानने वालों का बड़ा तीर्थ है। यहां महात्मा बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था। उसी प्रकार देवघर तथा गया हिन्दूओं के तीर्थ-स्थान हैं। गया फलगू नदी के तट पर है। पावा पुरी जैनों का पवित्र तीर्थ है। बिहार शरीफ मुसलमानों का पवित्र स्थान है। पटना में गुरु गोबिन्द सिंह ने जन्म लिया था, इस कारण सिखों का तीर्थ भी है।

नालंदा यहां का प्राचीन शिक्षा केन्द्र था। यहां पर हजारों विद्यार्थी दूर-दूर से तथा विदेशों से शिक्षा ग्रहण करने आते थे। यहां १५०० अध्यापक थे। यहां हर विषय की शिक्षा दी जाती थी। इसी तरह वैशाली राजगृह भी प्राचीन स्थान थे। अब केवल उनके अवशेष मिलते हैं, जिससे बिहार के वैभव का पता चलता है।

सिक्किम

सिक्किम भारत का नया और सुन्दर राज्य है। यह सारा प्रदेश हिमालय की गोद में बसा है। यह भारत से केवल सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। तिस्ता इस राज्य की बड़ी नदी है। भारत की सबसे ऊंची बर्फीली चोटी कांचन जंगा सिक्किम में ही है। तिस्ता घाटी और चुम्बी घाटी में सिक्किम फैला हुआ है।

इस प्रदेश में चावल, सुपारी, इलायची पैदा की जाती है। यहां नेपाली तथा लेपचा लोग रहते हैं। लेपचा बौद्ध धर्म को मानते हैं। इस कारण यहां उनके प्रमुख विहार हैं। लेपचाओं के धर्म-गुरु को लामा कहते हैं। यहां सारा वर्ष जलवायु ठंडा होता है, इस कारण लोगों के वस्त्र ढीले और ऊनी होते हैं। इनकी वेशभूषा तिब्बतवासियों से मिलती-जुलती है।

याक, भेड और बकरियां यहां के प्रमुख पशु हैं। इनकी ऊन से वस्त्र और सुन्दर सुन्दर गलीचे बनाये जाते हैं। गंगतोक सिक्किम की राजधानी है। यह एक सुन्दर और रमणीक पहाड़ी शहर है।

बंगाल

पूर्वी क्षेत्र में दूसरा बड़ा प्रदेश बंगाल है। इसे पश्चिमी बंगाल कहते हैं। बटवारे के पश्चात बंगाल का पूर्वी भाग बांग्ला देश कहलाता है। दार्जिलिंग बंगाल का सुन्दर पहाड़ी स्थान है। यहां पूर्वी भारत से गर्मी के दिनों में पर्यटक आते हैं। यहां से हिमालय की सुन्दर बर्फीली चोटियां दूर से दिखाई देती हैं। हिमालय की सारी सुन्दरता इस स्थान पर बिखरी है। यहां की अनोखी शोभा मन को भा जाती है।

दुर्गा पूजा

नीचे गंगा का मैदानी इलाका है। यहां तक गंगा की धारा बहुत विशाल हो जाती है। इसी प्रदेश से गंगा अपना मुहाना बनाना शुरू करती है। यहां फरक्का नामक स्थान पर गंगा पर लम्बा बांध बांधा गया है। इस स्थान पर गंगा की दो धारायें हो जाती हैं। प्रमुख धारा पद्मा नाम से बांग्ला देश में प्रवेश करती है। दूसरी छोटी धारा हुगली नाम से बंगाल में से होकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है। इसी हुगली पर कलकत्ता शहर बसा है।

यह मैदानी प्रदेश बहुत उपजाऊ है। यहां नहरों और नदियों द्वारा सिंचाई की जाती है। यहां की मुख्य फसल पटसन, चावल है। इस मैदानी प्रदेश में सुन्दर हरे-भरे खेत चारों और मिलते हैं। पास-पास छोटे-बड़े गांव हैं। गांव के हर मकान के साथ फुलवाड़ी और पोखर है। यहां का मुख्य

भोजन चावल और पोख से मिलने वाली मछली है।

हुगली के निकट पटसन की बड़ी-बड़ी मिलें हैं। पटसन से बोरी, टाट, रस्सी आदि बनाये जाते हैं। हमारे देश की पटसन सारे संसार के देशों में जाती है। पटसन की बोरियों में अनाज आदि भरा जाता है। टाट भी अनेक कामों में प्रयोग होता है।

बंगाल में भी कोयले की बड़ी खानें हैं। यहां दुर्गापुर और आसनसोल में इस्पात के कारखाने हैं। चितरंजन में पहले भाप के रेल इंजन बनते थे अब बिजली के रेल इंजन बनाये जा रहे हैं। बंगाल में रेशम तथा सूती हथकरघा वस्त्र भी बनते हैं। यहां की साड़ियां बहुत प्रसिद्ध हैं।

भारत में बिना आधार के नदी का पुल हावड़ा में है। यह इंजीनियरी का कमाल है। नदी के दोनों ओर इस्पात के भारी गार्टर फंसाकर तथा जोड़ कर पुल खड़ा किया गया है। यह देखने योग्य है। हावड़ा कलकत्ता शहर का एक भाग है। कलकत्ता के दूसरे भाग को सियालदह कहते हैं। यह दोनों भाग हुगली के तट पर बसे हैं।

कलकत्ता भारत का सबसे बड़ा शहर है। बंगाल में बंगला भाषा बोली जाती है। यह बड़ी मीठी भाषा है। महाकवि टैगोर कलकत्ता में ही रहते थे। इनका लिखा जनगणमन गीत हमारा राष्ट्रीय गीत है। वन्देमातरम् गीत भी बंगाल के लेखक बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने लिखा था। यह दोनों गीत बड़े स्फूर्ति देने वाले हैं।

कलकत्ता बहुत बड़ा व्यापार केन्द्र है। यहां बड़े-बड़े बाजार हैं; ऊंची-ऊंची इमारतें हैं। करोड़ों रुपयों का व्यापार प्रतिदिन होता है। कलकत्ता की दुर्गा पूजा बहुत प्रसिद्ध है जो बहुत शान से मनाई जाती है। दुर्गा-पूजा बंगाल का सबसे बड़ा त्यौहार है। इन दिनों नृत्य, संगीत, नाटक के कार्यक्रम भी होते हैं।

बंगाल का जलवायु खुला है। शीत ऋतु यहां बहुत कम समय रहती है, इस कारण इधर के स्त्री-पुरुषों का पहनावा बहुत सुन्दर है। पुरुष साधारण धोती और कुर्ता तथा स्त्री चौड़ी पट्टी वाली साड़ियां पहनती हैं। शहरी लोग दफ्तर बाबू शर्ट-पेंट भी पहनते हैं।

कलकत्ता में स्वामी रामकृष्ण परमहंस का मठ है। उनके शिष्य स्वामी विवेकानन्द थे जो बहुत बड़े विद्वान संन्यासी थे। कलकत्ता तक समुद्री जहाज आते हैं। इस कारण कलकत्ता समुद्री बन्दरगाह भी है। भारत का गंगा सागर मेला बंगाल के समुद्री तट पर लगता है। इस स्थान पर गंगाजी सागर में मिलती हैं।

बंगाल की खाड़ी में भारत के बड़े द्वीप समूह हैं। ये द्वीप अंडमान निकोबार कहलाते हैं। यह २०० द्वीपों का समूह है। यह भारत की मुख्य भूमि से दूर हैं। समुद्री जहाज द्वारा दो दिन का तथा हवाई जहाज द्वारा ५ घंटे का सफर है। कभी यहां हमारे देश-भक्तों को बन्दी बनाकर रखा जाता था। यह अंग्रेजों के समय की बात है।

बंगाल की वेशभूषा

अब तो इस द्वीप समूह में हमारी जल सेना का केन्द्र बन गया है। भारत के हर प्रान्त के लोग यहां रहते हैं। यहां आपसी व्यवहार की भाषा हिन्दी है। यहां की राजधानी पोर्ट ब्लेअर है। यह संघीय प्रदेश है। यहां के द्वीपों पर घने जंगल हैं और उनमें आदिवासी रहते हैं।

इन द्वीपों में नारियल, सुपारी, पपीता, अनन्नास आदि फल भी होते हैं। चावल यहां का मुख्य भोजन है। बहुत-सी खाने-पीने की वस्तुएं मुख्य भूमि से भी भेजी जाती हैं। कभी इन द्वीपों को काला पानी कहते थे। परन्तु अब यह सुन्दर द्वीप उन्नति पर हैं। अब यह दीप-माला के देश कहलाते हैं।

असम तथा उत्तरी-पूर्वी प्रदेश

भारत का यह प्रदेश एक संकरी पट्टी से देश के बाकी भागों से जुड़े हैं। यह सारे प्रदेश ब्रह्मपुत्र की घाटी तथा हिमालय की पूर्वी शृंखलाओं में हैं। इनमें सबसे बड़ा असम है। फिर अरुणाचल और मेघालय हैं। नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम तथा त्रिपुरा अन्य छोटे प्रदेश हैं।

सिंधु और सतलज की तरह ब्रह्मपुत्र भी मानसरोवर के पास से निकलती है। तिब्बत में इस नदी का नाम सांगपो है। हिमालय पर्वत पार करते समय इसकी धारा बहुत बलवान होती है। भारत में इस नदी में अथाह जल बहता है। यह बड़ी भयानक और प्यारी नदी है। हर वर्ष इस नदी में कई बार बाढ़ आती है। ब्रह्मपुत्र द्वारा लाई उपजाऊ मिट्टी से ही ब्रह्मपुत्र की घाटी बनी है।

चाय की पत्ती बीनते हुए

इस घाटी में चावल और पटसन की फसल अच्छी होती है। यह प्रदेश हमारे देश के सबसे अधिक वर्षा वाले भाग में है इसमें असम और अरुणाचल

प्रदेश उत्तर में हैं तथा बाकी प्रदेश पूर्व और दक्षिण में हैं। यह सब प्रदेश खूब हरे-भरे हैं। यहां वर्षा वाले घने जंगल मिलते हैं।

असम राज्य के लोग असमिया भाषा बोलते हैं जो बंगला भाषा से मिलती जुलती है। इनका खान-पान, रहन-सहन बंगाल वासियों जैसा ही है। जलवायु के कारण थोड़ा सा अन्तर है। यहां बिहु नामक पर्व मनाया जाता है। इसमें नृत्य और मधुर गीत गाये जाते हैं।

गुवाहाटी असम का सबसे बड़ा शहर है। यहां ब्रह्मपुत्र पर बहुत लम्बा पुल है। इसके पास ही दिसपुर नामक स्थान पर असम की नई राजधानी प्राग्जोतिषपुर बसाई जा रही है। असम में पहाड़ी ढलानों पर चाय के बड़े-बड़े बागान हैं। चाय की झाड़ियां होती हैं। उन झाड़ियों से नर्म-नर्म पत्तियां तोड़कर इकट्ठी की जाती हैं। इस काम में यहां की स्त्रियां बहुत प्रवीण हैं। इन पत्तियों को सुखाकर चाय की पत्ती बनाई जाती है।

यहां के गांवों में मकान विशेष ढंग से बनाये जाते हैं। मकान के लिए पहले बांसों को भूमि में गाढ़ा जाता है। जमीन से ऊंचाई पर लकड़ी का फर्श बनाकर मकान पाटा जाता है।

असम में मिट्टी के तेल के अनेक कुएं हैं तथा तेल-शोधक कारखाने भी हैं। यहां का काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान विश्व प्रसिद्ध है। इस उद्यान में हाथी और गैण्डा को सुरक्षा दी गई है। यहां के हथकरघा के सूती और रेशमी वस्त्र भी बहुत प्रसिद्ध हैं।

अरुणाचल प्रदेश

यह भारत का उत्तर-पूर्व का प्रदेश है। सुबह उगते सूर्य की धूप सबसे पहले भारत की इसी धरती पर पड़ती है। इस कारण यथा गुण इस प्रदेश का नाम अरुणाचल प्रदेश है। यह प्रदेश हिमालय की पूर्वी शृंखलाओं में फैला है। इस कारण बहुत रमणीक और सुन्दर दृश्यों से भरपूर है। इस प्रदेश में आदिवासी जनजातियां रहती हैं। इनमें से बहुत से लोग बौद्ध धर्म को मानने

वाले हैं।

इतनगर इस प्रदेश की राजधानी है। यहां हर जनजाति की अपनी बोली और भाषा है। यहां आपसी व्यवहार में असमी और हिन्दी का प्रयोग होता है। इस प्रदेश में घने वन हैं। यहां के लोकनर्तक बहुत कुशल होते हैं। यह संघीय प्रदेश है।

नागालैण्ड

भारत के पूर्वी छोर का एक छोटा राज्य है नागालैंड। इस प्रदेश के वासी नागा कहलाते हैं। इनमें भी कई जातियां और कबीले हैं। ईसाई मिशन यहां वर्षों से काम कर रहे हैं इस कारण यहां लोगों ने ईसाई मत अपना लिया है। यहां की भाषा अंग्रेजी है। कोहिमा इस प्रदेश की राजधानी है।

नागा नृत्य

नागालैंड में छोटे-छोटे ग्राम बसे हैं। नागा लोग बहुत साहसी और बहादुर होते हैं। पहाड़ियों में सिमटे नागालैंड के लोग बहुत उत्साही तथा

लड़ाकू हैं। इनका लोक-नृत्य युद्ध-नृत्य जैसा लगता है। यह धान और मक्का बोते हैं। मुर्गी, बत्तख आदि पक्षी तथा सुअर और मिथुन पशु पालते हैं।

प्रत्येक नागा स्त्री कपड़ा बुनना जानती है। बुनाई में सुन्दर डिजाइन डाले जाते हैं। काले, नीले और लाल रंग का उपयोग अधिक करते हैं। बांस की सुन्दर-सुन्दर वस्तुएं भी हाथ से बनाते हैं। स्त्री-पुरुष सामूहिक नृत्यों में रुचि लेते हैं। यहां शिक्षा का बहुत प्रसार है। कोहिमा नागालैंड की राजधानी है। दीमापुर नागालैंड का व्यापार केन्द्र है। यह असम से आगे सड़क द्वारा जुड़ा है। कुछ वर्षों तक यहां रेल भी चलने लगेगी। नागा लोगों में जाति और समाज की बहुत एकता है।

मणिपुर

मणिपुर भी नागालैंड की तरह पहाड़ियों और घाटियों का प्रदेश है। इन लोगों की भी अपनी बोली और भाषा है। यहां का मणिपुरी नृत्य सारे देश में प्रसिद्ध है। यह नृत्य बहुत सुन्दर भावों वाला होता है। इस नृत्य में भगवान कृष्ण की लीलाओं को दिखाया जाता है।

मणिपुर के लोग चावल, गन्ना, आलू आदि की खेती करते हैं। यहां भी प्रत्येक स्त्री कपड़ा बुनना जानती है। यहां कपड़ा बुनने में सभी रंगों का प्रयोग होता है। इम्फाल यहां की राजधानी है। इस प्रदेश की सीमा बर्मा से मिलती है। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस आजाद हिन्द सेना के साथ मणिपुर तक आये थे। इस प्रदेश में भी घने जंगल हैं।

मिजोरम, त्रिपुरा, मेघालय

मिजोरम मिजो पहाड़ियों में बसा प्रदेश है। यह भारत का संघीय राज्य है। इसकी सीमाएं बांग्ला देश और बर्मा से मिलती हैं। यहां का मुख्य शहर

ऐजल है। यहां अधिकतर आदिवासी रहते हैं। नागालैंड की तरह यहां भी ईसाई मिशन का प्रचार अधिक है। लोग ईसाई मत को मानते हैं।

त्रिपुरा भी भारत का एक छोटा प्रदेश है। यह तीन ओर से बांग्ला देश से घिरा है। सड़क द्वारा ही यह देश के अन्य भागों से जुड़ा है। अगरतला इस प्रदेश की राजधानी है। इस प्रदेश में छोटी-छोटी नदियां और पहाड़ियां हैं।

मणिपुरी नृत्य

सुन्दर झीलें, घाटियां और वनों से यह प्रदेश भरा पड़ा है। यहां भी आदिवासी बसते हैं परन्तु अब बांग्ला देश से आए लोग अधिक संख्या में हैं। यहां की भाषा बंगला है।

मेघालय और गारो, खासी और जैंतिया पहाड़ियों का प्रदेश है। यह प्रदेश सारी दुनिया में अधिक वर्षा वाला प्रदेश है। चेरापूंजी संसार में अधिक वर्षा वाला स्थान है जो मेघालय में है। अधिक वर्षा के कारण ही इस प्रदेश को यह प्यारा नाम दिया गया है।

शिलांग मेघालय की राजधानी हैं। यह भारत का रमणीक और सुन्दर शहर है। यहां सारा वर्ष सुहावना मौसम होता है। गरमी की ऋतु में दूर-दूर से पर्यटक यहां आते हैं। यह प्रदेश भारत के अन्य भागों से रेल और सड़क द्वारा जुड़ा हुआ है।

हमारे देश का यह पूर्वी भाग अभी यातायात के साधनों में पिछड़ा है। इस कारण देश के बाकी भागों से पृथक् है। आपसी सम्पर्क बहुत कम है।

अब इन सब प्रदेशों में रेल मार्ग बनाने की योजनाएं हैं। कभी यह प्रदेश भी भारत से उसी प्रकार मिले होंगे जैसे दक्षिण भारत के प्रदेश हैं।

मध्य क्षेत्र : ओडिसा

ओडिसा बंगाल और बिहार के नीचे भारत के पूर्वी समुद्र तट पर है। इस प्रदेश का पुराना नाम कलिंग तथा उत्कल है। इस प्रदेश की भाषा ओडिया है। यह प्रदेश बंगाल की खाड़ी पर स्थित है। तट के साथ-साथ यह प्रदेश मैदानी है। ऊपर की ओर पठारी भाग है।

यहां की प्रमुख नदी महानदी है। यह भारत की सबसे बड़ी नदी है जो मध्य प्रदेश से बहकर ओडिसा में आती है। वर्षा ऋतु में इस नदी में भयंकर बाढ़ें आती थीं, परंतु अब हीराकुण्ड बांध बन जाने से यहां नहरें बन गई हैं। बांध पर पानी से बिजली भी बनती है। नहरों की सिंचाई के कारण धान यहां की मुख्य फसल है।

पूर्वी घाट इसी प्रदेश से आरम्भ होता है। पूर्वी घाट पहाड़ियों में बहुत से जंगल हैं। बिहार और मध्य प्रदेश की सीमा पर छोटा नागपुर की पहाड़ियां हैं। इन पहाड़ियों में ओडिसा के लौह धातु के विशाल भण्डार हैं। यह लौह धातु विदेश में भी भेजी जाती है। ओडिसा में राउरकेला नामक स्थान पर विशाल इस्पात कारखाना है। अब ओडिसा में भारी उद्योग के कारखाने भी बन गए हैं।

ओडिसा में प्राचीन तीर्थ स्थान भी हैं। इनमें पुरी और भुवनेश्वर विशेष प्रसिद्ध हैं। भुवनेश्वर तो मन्दिरों की नगरी है। यहां कई सुन्दर और प्राचीन मन्दिर हैं जिनमें लिंगराज सबसे प्रसिद्ध है। इस मन्दिर की शिल्प-कला बहुत सुन्दर है। भुवनेश्वर ओडिसा की राजधानी है। ओडिसा का नृत्य, ओडिसी कहलाता है। यह नृत्य बहुत सुन्दर होता है।

पुरी की रथयात्रा विश्व प्रसिद्ध है। यह उत्सव जून के अन्त या जुलाई

के आरम्भ के दिनों में मनाया जाता है। सैंकड़ों लोग इस रथ को खींचते हैं। रथ-यात्रा में तीन रथ होते हैं। लाखों लोग इस यात्रा को देखने पुरी पहुंचते हैं।

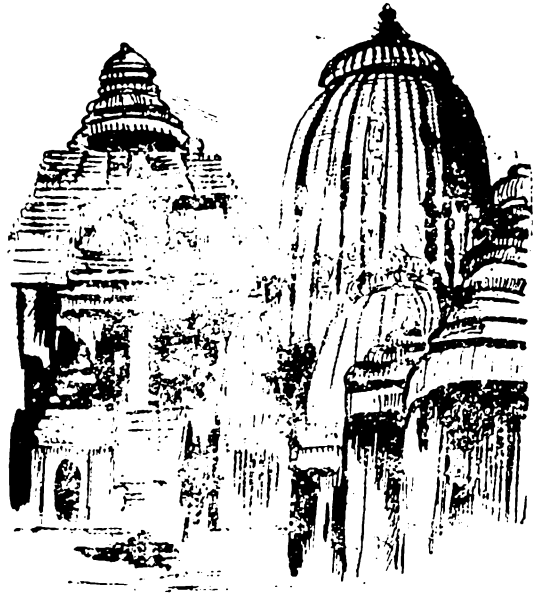

कोणार्क ओडिसा का प्रसिद्ध मन्दिर है। यह भगवान सूर्य का मन्दिर है। इसमें शिल्प-कला अपने पूरे निखार पर है। इस मन्दिर की कल्पना सूर्य के रथ जैसी है। यहाँ पत्थर के अढ़ाई मीटर ऊंचे पहिये बने हैं।

कटक ओडिसा का उद्योग नगर है। पहले यह ओडिसा की राजधानी था। यहाँ महानदी पर बड़ा रेल पुल है। यहीं से महानदी का मुहाना बनना आरम्भ हो जाता है। यह सारी धरती बहुत उपजाऊ है।

मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश ठीक भारत के मध्य में बसा है। यह भारत का सबसे बड़ा प्रदेश है। यह प्रदेश पठारी पहाड़ियों, नदियों, घने वनों से शोभा पा रहा है।

यह भारत का चौराहा है। पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण जाने का मार्ग इसी प्रदेश से है।

इस प्रदेश में पूर्व से पश्चिम फैले हुए दो पहाड़ हैं। इनका नाम विन्ध्य और सतपुड़ा है। बिहार और ओडिसा की सीमा पर भी छोटा नागपुर की पहाड़ियाँ हैं। यहाँ उपजाऊ संकरे मैदान भी हैं। मालवा का इलाका मैदानी है।

नर्मदा और तापी इस प्रदेश की प्रमुख नदियाँ हैं। नर्मदा, सतपुड़ा और विन्ध्य के बीच की घाटी में बहती है। यह दोनों नदियां अरब की खाड़ी में गिरती हैं। महानदी इसी प्रदेश से निकलती है। यमुना की सहायक सब नदियाँ तथा सोन नदी भी मध्य प्रदेश से निकलती है।

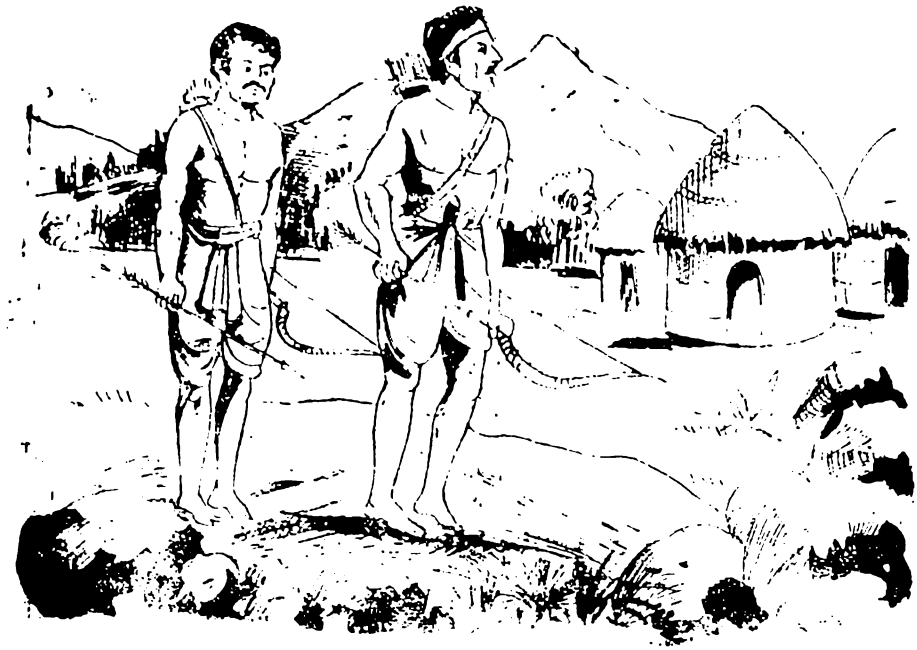

गोंड आदिवासी

यहाँ के पर्वत हरे-भरे वनों से ढके हैं। इन वनों में आदिवासी लोग रहते हैं। इन वनों में कई राष्ट्रीय उद्यान और पशु विहार बने हैं। जिनमें से कान्हा, बाँधवगढ़ और शिवपुरी प्रसिद्ध हैं। मध्य प्रदेश की बस्तर की पहाड़ियाँ

खनिज लौह के भंडार हैं। यहां के मुडिया आदिवासी सींग लगाकर ढोल बजाते हैं तथा उनकी स्त्रियाँ नाचती हैं।

मध्य प्रदेश के गोंडवाना में गोंड आदिवासी रहते हैं। यह तीर कमान अपने पास रखते हैं, इनके निशाने बहुत पक्के होते हैं। मध्य प्रदेश में भारत में सबसे अधिक आदिवासी और गिरीजन रहते हैं। इनके रीति-रिवाज, वेश भूषा, रहन-सहन शहर के लोगों से भिन्न हैं।

मध्य प्रदेश का छतीसगढ़ का मैदान, जो पूर्व में है, चावल की उपज का बहुत बड़ा क्षेत्र है। इसी प्रकार मालवा में गेहूं, चना, सरसों और कपास की उपज होती है। यहाँ वनों में जड़ी-बूटियां बहुत होती हैं। कुछ इलाकों में फलों की पैदावार भी होती है।

यहाँ के वनों में सागौन की लकड़ी होती है। यह इमारती सामान की उपयोगी और महंगी लकड़ी है। वनों में बीड़ी बनाने के तेंदू पत्ते भी होते हैं। यह घरेलू उद्योग मध्य प्रदेश में अच्छी तरह फैला हुआ है।

यहाँ की भूमि में बहुत धन छिपा हुआ है। यहाँ पन्ना और हीरे मिलते हैं। कच्चा लोहा, मैगनीज, बाक्साइट तथा कोयले के भी बहुत भण्डार हैं। यहाँ से लौह खनिज दूसरे देशों में भेजा जाता है।

इस राज्य में प्राचीन समय के प्रसिद्ध नगर हैं। उज्जैन, विदिशा, साँची, खुजराहो आदि बहुत प्रसिद्ध हैं। यहाँ की मूर्ति-कला बहुत ऊंचे दर्जे की है। उज्जैन में शिप्रा नदी के तट पर कुम्भ का मेला भी जमता है! माँडू का किला और ग्वालियर का किला दोनों बहुत प्राचीन हैं।

भोपाल, मध्य प्रदेश की राजधानी है। यह भी बहुत सुन्दर नगर है। इसी प्रकार जबलपुर, ग्वालियर, इंदौर आदि प्रमुख नगर हैं। यहाँ की भाषा हिन्दी है। भोपाल में बिजली बनाने की मशीनों का कारखाना है। नेपानगर में अखबारी कागज का बड़ा कारखाना है।

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र अरब सागर पर स्थित भारत का प्रवेश द्वार है। यह प्रदेश इतिहास प्रसिद्ध राष्ट्रकूट वंश के कारण महाराष्ट्र कहलाता है। पश्चिमी घाट का पठारी इलाका इसी प्रदेश में से शुरू होता है। यह प्रदेश भारतीय शिल्पकला और चित्र कला का खजाना है। भारत के प्राचीन गुफा मंदिरों में सबसे अधिक मंदिर इसी प्रदेश में हैं।

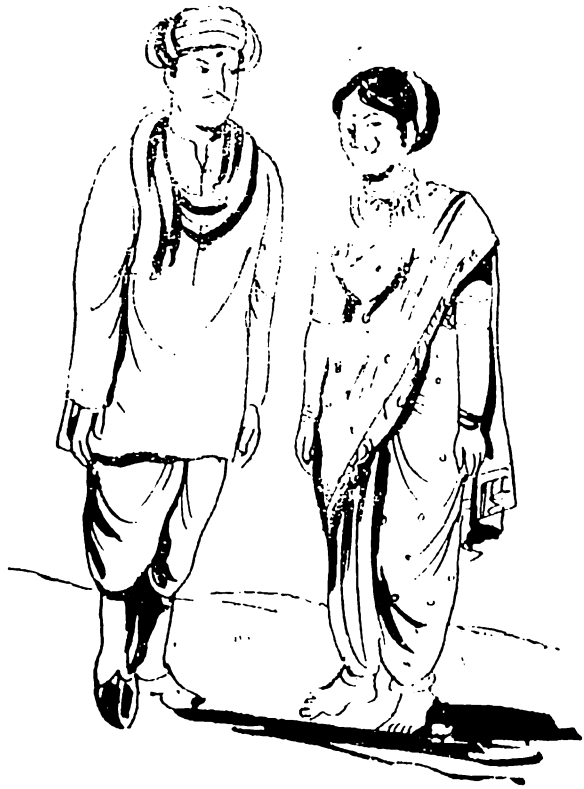

महाराष्ट्रीय वेषभूषा

छत्रपति शिवाजी इसी प्रदेश के थे। उन्होंने महान मराठा शक्ति को उठाया था जिसकी धाक १२५ वर्षों तक सारे भारत में रही। संत ज्ञानेश्वर, संत तुकाराम भी इसी महाराष्ट्र के हैं। भारत की आजादी की लड़ाई के

पहलें नेता रानाडे, गोखले, तिलक आदि भी इसी प्रदेश के हैं। मराठे वीर सैनिक, कर्मठ नेता और कुशल उद्योगी हैं। महाराष्ट्र व्यापार, उद्योग तथा खेती की उन्नति में देश का प्रथम प्रदेश है।

हमें प्राचीन भारत का दर्शन अजंता और ऐलोरा की गुफाओं में होता है। अब से दो हजार वर्ष पुराने भारत के चित्र अजंता में बोल रहे हैं। ऐलोरा का कैलाश मंदिर मूर्ति कला का बेजोड़ नमूना है। इस स्थान पर पूरी पहाड़ी को काट कर मंदिर बनाया गया है।

बम्बई के पास धारापुरी (ऐलिफेंटा) की गुफाएं बहुत प्रसिद्ध हैं। धारापुरी के गुफा मंदिर एक द्वीप पर है। इसकी त्रिमूर्ति विश्व-प्रसिद्ध है। इस स्थान की कला भी बहुत उत्तम है। पूना महाराष्ट्र की विद्या नगरी है। यहां पर प्राचीन और नवीन शिक्षा के केन्द्र हैं।

नासिक के पास यम्बक नामक स्थान पर गोदावरी नदी निकलती है। नासिक के पास ही रामायण की पंचवटी थी। यहां १२ वर्षों के पश्चात कुम्भ मेला भी लगता है। इधर विठोबा का मेला भी प्रसिद्ध है। महाबलेश्वर के पास कृष्णा नदी निकलती है। यह सुन्दर पहाड़ी स्थान है।

बम्बई महाराष्ट्र की राजधानी है। यह भारत का सबसे बड़ा उद्योग नगर है। यहां हर प्रकार के सामान के बड़े-बड़े कारखाने हैं। यह भारत के व्यापार का प्रसिद्ध केन्द्र भी है। यहां बड़े आधार पर विदेश व्यापार भी होता है। भारत की हिन्दी फिल्मों के बनाने का केन्द्र भी बम्बई है।

नागपुर, शोलापुर, औरंगाबाद भी महाराष्ट्र के प्रसिद्ध नगर हैं। महाराष्ट्र का गणेश उत्सव सबसे बड़ा पर्व है। यहां के लोगों की वेष-भूषा बहुत सीधी सादी है। मराठी स्त्रियां नौ गजी साड़ियां बांधती हैं। पुरुष सिर पर गोलाई में पगड़ी बांधते हैं।

पश्चिमी क्षेत्र : राजस्थान

भारत का दूसरा बड़ा राज्य राजस्थान है। यह वीर राजपूतों की धरती है; इनके बलिदानों, वीरता, शूरता का यश इतिहास भी गाता है। रानी पद्मिनी जैसी सतियों का यश चित्तौड़ का चप्पा-चप्पा गाता है। महाराणा प्रताप इसी चित्तौड़ के स्वामी थे।

भारत का थार रेगिस्तान इसी प्रदेश में है। जहां चारों ओर बालू-ही-बालू है। इस रेगिस्तान की धरती को हरा-भरा करने के लिए विश्व की सबसे बड़ी पक्की नहर बन रही है। पंजाब के हरिके नामक स्थान से यह नहर लाई जा रही है। इस नहर का नाम अब इन्दिरा गांधी नहर है।

अरावली पर्वत इस राज्य के बीच में से गुजरता है। इन पहाड़ियों के दक्षिण में पठारी प्रदेश है। इन इलाकों में राजस्थान के खनिज भण्डार धरती में से मिल रहे हैं। उदयपुर, आबू, अरावली के नीचे वाले भाग में बसे हैं। यहां काफी वर्षा होती है। थार रेगिस्तान में तो कई-कई साल वर्षा नहीं होती।

अरावली की घाटियों में जयपुर, अलवर, भरतपुर आदि प्रमुख शहर हैं। कोटा राजस्थान का उद्योग नगर है। यहां राजस्थान की प्रसिद्ध नदी चम्बल बहती है। नमक वाली साम्भर झील भी राजस्थान में है। श्री गंगानगर, बीकानेर में खेती के लिए नहरों द्वारा जल प्राप्त होता है। भारत का सबसे बड़ा खेत सूरतगढ़ भी श्री गंगानगर के पास हैं।

यहां गेहूं, चना, सरसों और बाजरा मुख्य फसलें हैं। लोग भेड़-बकरी तथा गायें पालते हैं। ऊंट सवारी, बोझा ढोने और खेती के काम में लाया जाता है। यहां दिन में गरमी पड़ती है और रातें ठंडी होती हैं।

जयपुर राजस्थान की राजधानी है। यहां का हवा महल बहुत प्रसिद्ध है। इसे गुलाबी शहर भी कहते हैं क्योंकि यहां के मकानों पर गुलाबी रंग के चूने के लेप का प्रयोग होता है। यहां का जंतर-मंतर भी बहुत सुन्दर है। जंतर-मंतर में सूरज, चांद, तथा दूसरे ग्रहों की दूरी मापी जाती थी।

आबू में दिलबाड़ा के जैन मंदिर है। अजमेर में पुष्कर झील और ख्वाजा गरीब नवाब का मकबरा है। जगत में प्राचीन अम्बा देवी का मंदिर है। राणकपुर में भी प्राचीन जैन मंदिर हैं। यह सभी स्थान कला के भण्डार हैं।

गुजरात

पश्चिमी भारत के अरब सागर के तट पर गुजरात प्रदेश है। यहां की धरती मैदानी और पठारी है। नर्मदा और ताप्ती इसी प्रदेश में से होकर सागर में मिलती हैं। मही और साबरमती यहां की दूसरी छोटी नदियां हैं। सौराष्ट्र के समुद्री तट पर ओखा, पोरबंदर, विरावल आदि छोटी बंदरगाह हैं। काण्डला जो कच्छ की खाड़ी में है, यहां की प्रसिद्ध बंदरगाह है।

गरबा नृत्य

यहां के लोग बहुत सीधे-सादे होते हैं। जलवायु के अनुसार उनके पहनावे में राजस्थान से कुछ अन्तर है। यहां की काली और चिकनी मिट्टी में कपास बहुत उपजती है। अन्य फसलें बाजरा और मूंगफली हैं। यहां के लोग

दूध देनें वाले पशु—गायें और भैंस भी पालते हैं।

भारत की सबसे अधिक कपड़ा मिलें गुजरात में हैं। भारत की सबसे बड़ी डेयरी फार्म भी गुजरात में आनंद नामक स्थान पर है। भारत में कपड़ा-व्यापार के बड़े केन्द्र गुजरात में सूरत और अहमदाबाद हैं। गुजरात का प्रसिद्ध लोक-नृत्य गरबा है जो इस प्रदेश के लोगों की खुशहाली की झलक देता है।

गुजरात के लोगों का भोजन बहुत शुद्ध और सादा होता है। जिसमें बाजरे या गेहूं की रोटी, सब्जियां दही, घी आदि उत्तम पदार्थ होते हैं। यहां के लोग परम वैष्णव हैं, मांस आदि नहीं खाते। दक्षिण भारत में चपाती वाले उत्तर भारतीय योजना को गुजराती भोजन ही कहते हैं।

गुजराती वेशभूषा

गुजरात आधुनिक भारत के बनाने वालों की भूमि है। स्वामी दयानंद, राष्ट्रपिता गांधी और सरदार पटेल गुजरात के सपूत हैं। महात्मा गांधी

पोरबंदर में जन्मे थे। इन्होंने अपना आश्रम अहमदाबाद में साबरमती के तट पर बनाया था। गांधीजी ने हमारे भारत को आजाद कराने में सफलता पाई थी।

गुजरात की राजधानी गांधीधाम है। यह नया शहर गांधीजी की याद में बसाया जा रहा है। यह अहमदाबाद के पास है। गुजरात में गिर का सुरक्षित वन है जहां बब्बर शेर रहते हैं। गुजरात में समुद्र के जल से नमक भी बनाया जाता है। यहां जमीन में से मिट्टी का तेल भी निकाला जाता है। यहां की भाषा गुजराती है। यह हिन्दी से बहुत मिलती-जुलती है।

दक्षिण भारत : आंध्र प्रदेश

दक्षिण भारत के चार राज्यों में आंध्र प्रदेश सबसे बड़ा राज्य है। यहां की भाषा तेलुगू है। इस प्रदेश की दो प्रमुख नदियां गोदावरी और कृष्णा हैं। गोदावरी और कृष्णा महाराष्ट्र से निकलती हैं। आंध्र प्रदेश में इन नदियों पर बड़े-बड़े बांध बनाकर नहरें निकाली गई हैं। इन नहरों से सिंचाई की जाती है। तथा नावों द्वारा माल ढोया जाता है।

आंध्र का बंगाल की खाड़ी के तट वाला इलाका ही मैदानी है। बाकी सारा प्रदेश पठारी है। मैदानी इलाके में नहरों द्वारा खेतों में पानी पहुंचाया जाता है। पठारी इलाकों में वर्षा का तथा नदियों का जल बड़े-बड़े तालाबों में इकट्ठा किया जाता है, फिर उचित समय पर उससे सिंचाई की जाती है। आंध्र में ऐसे बड़े-बड़े सैकड़ों तालाब हैं। हैदराबाद शहर जो कि प्रदेश की राजधानी है इन नदी तालाबों पर बसा है।

इस प्रदेश में चावल, तम्बाकू, हल्दी, ज्वार, मूंगफली की फसलें प्रमुख हैं। आम आदि फलों का भी बहुत उत्पादन होता है। गुजरात के पश्चात आंध्र में दूध के बड़े डेयरी फार्म हैं। आंध्र प्रदेश की धरती में कच्चा लोहा, अभ्रक, कोयले आदि के बड़े-बड़े भण्डार हैं। कोयला भण्डारों पर अब बड़े-बड़े

भण्डार हैं। कोयला भण्डारों पर अब बड़े-बड़े भारी बिजलीघर बनाये जा रहे हैं।

विशाखापट्टनम् यहां का सबसे बड़ा पत्तन (बंदरगाह) है। यहां समुद्री जहाज भी बनाए जाते हैं। मिट्टी के तेल को साफ करने का कारखाना भी है।

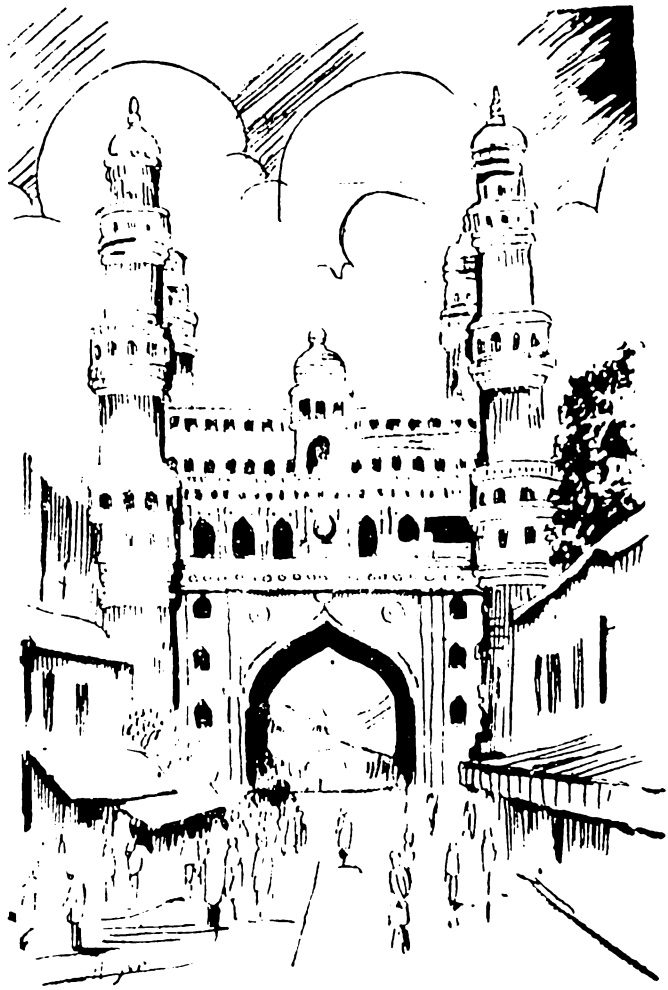

चारमीनार

विजयवाड़ा आंध्र के तट प्रदेश का बड़ा शहर है। यह आंध्र की उद्योग नगरी है। यह रेल और सड़क का बड़ा केन्द्र है। उसी प्रकार राजमहेन्द्रवरम् यहां

का प्राचीन शहर है। यहा कुम्भ जैसा गोदावरी पुष्करम् मेला लगता है। भद्राचलम् में गोदावरी पर बड़ा प्रसिद्ध राम मंदिर है।

हैदराबाद, जो आंध्र की राजधानी है, भी पुराना शहर है। यहां की चारमीनार बहुत प्रसिद्ध है। यहां सालारजंग का अजायब घर है। आंध्र का प्रसिद्ध लोक-नृत्य कुचीपुड़ी है। आंध्र में हिन्दी भी समझी-बोली जाती है। यहां का तिरुपति का वेंकटेश्वर मंदिर बहुत प्रसिद्ध है जिसके दर्शन करने हजारों यात्री प्रतिदिन आते हैं।

तमिलनाडु

तमिलनाडु मन्दिरों का राज्य है। यहां हर छोटे-बड़े शहर में विशाल मंदिर हैं। मदुरई में तमिलनाडु का सबसे सुन्दर मंदिर है। इसका नाम मीनाक्षी मंदिर है। इसके चारों तरफ चार विशाल गोपुरम हैं। इन गोपुरमों पर सैकड़ों देवी-देवताओं की मूर्ति बनी हैं। पुराण कथाओं की सब कहानियां गोपुरमों पर बनी हैं। मंदिर में हजार स्तम्भों के बरामदे हैं। यहां भी मूर्ति कला का शिल्प बहुत सुन्दर है। मदुरै में कपड़ा मिलें भी हैं। यह तमिलनाडु का दूसरा बड़ा शहर है।

कांचीपुरम तमिलनाडु का एक पुराना शहर है। यहां सैकड़ों मंदिर हैं। यह भारत के पवित्र सात शहरों में से एक है। इसके पास ही महाबलीपुरम है। यहां पहाड़ काटकर मंदिर बनाए गए हैं। यहां का पाण्डव रथ-मंदिर बहुत प्रसिद्ध है। संसार का सबसे बड़ा पत्थर का फलक भी यहां है। इस फलक पर मूर्तियां खुदी हैं। दो हाथी ऐसे लगते हैं जैसे पत्थर में से बाहर आ रहे हों। इस फलक को अर्जुन की तपस्या कहते हैं। कई इसको गंगा-अवतरण कहते हैं।

तंजाऊर का बृहदीश्वर मंदिर भारत का सबसे ऊंचा मंदिर है। यह ठोस पत्थर और चट्टानों का बना है। इसका कलश ८४ टन वजन का एक ही पत्थर

से बना है। इसका विशाल नंदी भी एक ही शिला से बना है। यह मंदिर भारत की वास्तुकला का चमत्कार है। इसी प्रकार चिदम्बरम्, तिरुच्चिरापल्ली, मायावरम्, स्वामी मलै, त्रिचन्दूर, पलनी, तिरुणेलवेली आदि स्थानों पर विशाल मंदिर हैं, जिन्हें यात्री दूर-दूर से देखने आते हैं।

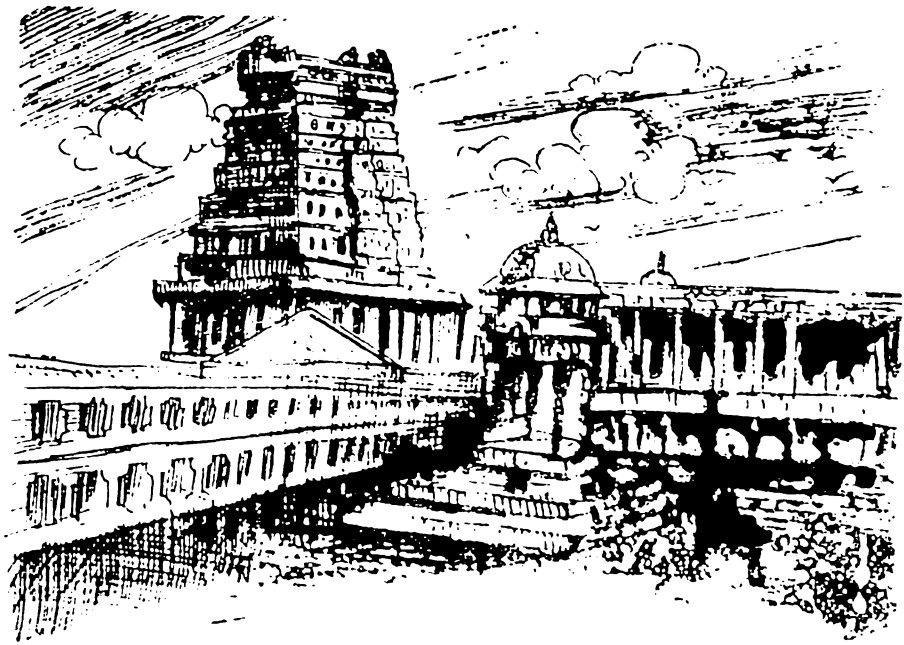

तमिलनाडु में कावेरी नदी बहती है। यह इस राज्य की मुख्य नदी है। इस पर बांध बनाकर नहरें निकाली गई हैं। इस नदी के जल का पूरा प्रयोग खेती में होता है। यह दक्षिण की गंगा है। प्राचीन समय का कावेरी पर बना बांध अब तक प्रयोग में आ रहा है। कुभाकोणम् शहर इसी नदी पर है। यहां हर बारह वर्षों के पश्चात महामाधम् का कुम्म मेला लगता है। यहां भी सैकड़ों मंदिर हैं।

तमिलनाडु की राजधानी मद्रास है। यह भारत का एक बड़ा शहर और जहाज पत्तन है। इसके समुद्र का बालू-तट भी बहुत प्रसिद्ध हैं। यहां कई कारखाने हैं, जिसमें रेल डिब्बा कारखाना भी है। तमिलनाडु की भाषा तमिल है। यह बहुत प्राचीन और मीठी भाषा है। तमिल देश को द्रविड़ देश

भी कहते हैं। यह इस प्रदेश का प्राचीन नाम है।

भारत का दक्षिणी कोना कुमारी अंतरीप है। यहां कन्याकुमारी का प्रसिद्ध मन्दिर है। विवेकानन्द शिला स्मारक समुद्र के अन्दर एक चट्टान पर खड़ा है। यहां सूर्य उदय और अस्त होने का दृश्य बहुत लुभावना है। यहां तीन समुद्र मिलते हैं, नीचे हिंदमहासागर, पश्चिम अरब सागर, पूर्व बंगाल की खाड़ी। इन सबका संगम कन्याकुमारी पर होता है।

इस तरह सारा तमिलनाडु बहुत सुन्दर प्रदेश है। रामेश्वरम् भी तमिलनाडु में मनार की खाड़ी के टापू पर बसा है। यह हमारा पवित्र धाम है। यहां भगवान राम ने लंका विजय करने के लिए सेतुबंध पुल बनवाया था। यहां का मन्दिर भी बहुत सुन्दर है। इस मन्दिर के गलियारे और बरामदे मूर्तिकला के सुन्दर रूप हैं। भारत के सबसे चौड़े और ऊंचे बरामदे इसी मन्दिर के हैं।

प्राचीन भारत के गौरव को तमिलनाडु ने सम्भाला है। भारत की प्राचीन शिक्षा का ढंग, पूजा का ढंग यहां अभी तक चल रहा है। हमारी परम्पराओं की रक्षा तमिलनाडु ने की। इस कारण यह राज्य बहुत पवित्र माना जाता है। तमिलनाडु का शास्त्रीय नृत्य भरत नाट्यम् है। इसमें नाचने का भाव बहुत सुन्दर और सात्विक है।

कर्नाटक

कर्नाटक का सारा प्रदेश पश्चिमी धार और दक्षिणी पठार में है। यहां की मिट्टी लाल है। इस प्रदेश में कावेरी, तुंगभद्रा, कृष्णा और शरावती आदि नदियां बहती हैं। यहां वर्षा भी काफी होती है इस कारण यह भारत के हरे-भरे प्रदेशों में से एक है। यहां की नीलगिरि पहाड़ियों में चंदन के वृक्ष वन भी हैं।

इस प्रदेश में नदियों पर बांध बांधकर नहरें काटी गई हैं। इस कारण

यहां की पठारी धरती में भी काफी फसल होती है। यहां चावल, कपास, रागी आदि अन्न उपजते हैं। यहां रेशम के कीड़े पाले जाते हैं। काफी भी यहां की खास पैदावार है। यहां का रेशम विश्व प्रसिद्ध है। सारे देश में रेशम पैदा करने वाला बड़ा केन्द्र कर्नाटक ही है।

बैंगलूर इस प्रदेश की राजधानी है। यह समुद्र तल से ऊंचा स्थान है। इस कारण यहां सारा वर्ष मौसम सुहावना होता है। मिट्टी और धूल इस स्थान में नहीं उड़ती। इस कारण बड़े-बड़े कल-कारखाने बैंगलूर में खुल गए हैं। यहां हवाई जहाज, टेलीफोन, घड़ियां, फोटो फिल्म, बड़ी मशीनों के बड़े भारी कारखाने हैं।

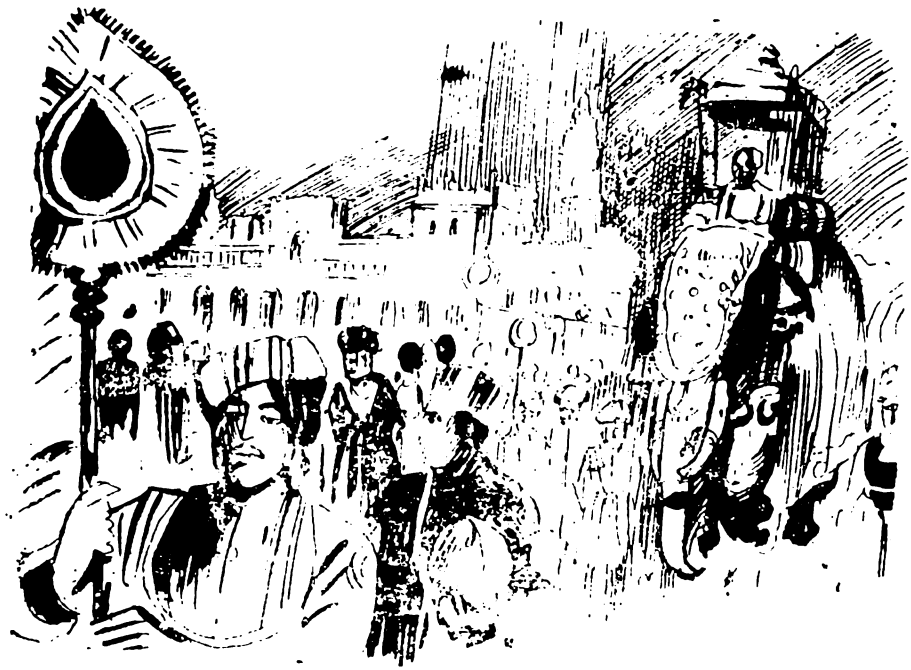

मैसूर का दशहरा

मैसूर कर्नाटक का पुराना और प्रसिद्ध शहर है। यह भी बहुत सुन्दर-सुहावना स्थान है। यहां पर कावेरी नदी के बांध पर विश्वप्रसिद्ध वृन्दावन बाग बना है। यहां चंदन का तेल बनाने का कारखाना है। यहां का दशहरा

बहुत प्रसिद्ध है। इस दिन हाथियों का जलूस निकाला जाता है।

कर्नाटक में बीजापुर पर विश्व का सबसे बड़ा गुंबद है। उसे गोल गुंबद कहते हैं। यहां शरावती नदी विश्व का सबसे बड़ा प्रताप बनाती है। सैकड़ों मीटर ऊपर से पानी गिरता है। इस सुहावने स्थान का नाम जोग प्रताप है। कर्नाटक में पानी से बिजली बनाने के बहुत से बहुधंधी बांध हैं, जिसमें तुंगभद्रा, शरावती, शिवसमुद्रम् बहुत प्रसिद्ध हैं। भारत में पानी से बिजली बनाने का सबसे पहला बिजली घर कर्नाटक में ही बना था।

यहां की धरती खनिजों से भरपूर है। कुद्रेमुख में तो लौह खनिज के पहाड़ हैं। भारत की सोने की कोलार की खानें भी कर्नाटक में हैं। यहां का भद्रावती का इस्पात कारखाना दक्षिण-भारत का बड़ा कारखाना है। मंगलूर यहां का बड़ा जहाजी पत्तन है।

कर्नाटक प्राचीन भारत का प्रसिद्ध इतिहास प्रसिद्ध स्थान है। यहां पर ही प्रसिद्ध विजयनगर राजाओं की राजधानी थी। प्राचीन समय के मन्दिर जिन पर ओप की चमकीली चमक है बेलूर में है। इसी प्रकार श्रीरंगपट्टनम्, शिव समुद्रम् कावेरी के द्वीपों पर प्रसिद्ध मंदिर हैं। कर्नाटक की भाषा कन्नड़ है। यह भी द्रविड़ भाषा है।

गोआ

महाराष्ट्र और कर्नाटक की सीमाओं से घिरा गोआ समुद्र तट का छोटा संघीय प्रदेश है। इसकी राजधानी पणजी है। यहां की भाषा कोंणकी है जो मराठी से मिलती-जुलती है। यह छोटा परन्तु बहुत सुन्दर प्रदेश है। यहां हिंदू और ईसाई धर्म को मानने वाले लोग अधिक हैं। यहां प्राचीन गिरजे और सुन्दर मन्दिर भी हैं।

यहां बड़े पैमाने पर खनिज लौह निकाला जाता है और विदेशों में भेजा जाता है। यहां प्रकृति ने सुहावना जलवायु प्रदान किया है। यहां के समुद्र के

बालू तट बहुत प्रसिद्ध है। यहां सारा वर्ष जलवायु एक समान है। इस कारण दूर-दूर से पर्यटक इन बालू तटों पर स्नान का आनन्द मनाने आते हैं। इस राज्य के दो अन्य भाग दीव और दमन गुजरात के समुद्री किनारे पर स्थित हैं। गोआ को भारत की सबसे बड़ी पर्यटक-नगरी कहते हैं। वास्कोडीगामा यहां का जहाज पत्तन है।

केरल

भारत के दक्षिण पश्चिम का राज्य केरल है। उत्तर में कश्मीर सबसे सुन्दर और मोहक प्रदेश है तो दक्षिण में केरल है। यहां बर्फ से चमकती चोटियां हैं। परन्तु नीले रंग का समुद्री जल भुजाओं के समान तट के अन्दर तक घुसा है। इन जल-सरोवरों को अनूप कहते हैं। केरल के तटीय प्रदेश में नहरों द्वारा अनूप एक-दूसरे से जुड़े हैं। अलप्पी नामक स्थान इन अनूपों से घिरा सबसे सुन्दर शहर है। इसे भारत का वीनस कहते हैं।

केरल नारियल का घर है। यहां सारा साल वर्षा होती है इस कारण नारियल के घने झाड़ चारों ओर मिलते हैं। नारियल का प्रयोग यहां भोजन में सबसे अधिक है। नारियल के तेल, गिरी और जल से विविध भोजन बनते हैं।

केरल के आर्थिक जीवन में भी नारियल का बहुत हाथ है। इसके पत्तों से छप्पर तथा दीवारें तानी जानी हैं। तने से मकान को सहारा दिया जाता है। नारियल से पायदान, टाट, रस्सी तथा घरेलू वस्तुएं भी बनाई जाती हैं। हजारों लोग अपनी जीविका इसी ढंग से कमाते हैं।

केरल राज्य का अधिकतर भाग पहाड़ी है। समुद्रतट की ओर संकरा मैदान है। यहां भारी वर्षा होती है। गरमी भी खूब पड़ती है। इस कारण यहां घने जंगल हैं। इन जंगलों में सागौन, रबड़ आदि के पेड़ हैं। यहां सुपारी तथा गर्म मसालों की वस्तुएं—लौंग, काली मिर्च, दाल चीनी, सोंठ आदि भी पैदा की जाती है। भारत में सबसे अधिक छोटी इलायची इसी प्रदेश में होती है।

यहां का काजू भी बहुत मशहूर है। केरल की भाषा मलायलम है। यहां हिन्दू, मुस्लिम; ईसाई और यहूदी भी बसते हैं। कोचिन बड़ा समुद्री पत्तन है।

यहां तेलशोधक कारखाना और जहाज बनाने का कारखाना भी है। कोचिन से ही पश्चिमी द्वीप समूह लक्षदीव को नौका जाती है। लक्षदीव हमारा संघीय क्षेत्र है। कवारती यहां की राजधानी है।

केरल की राजधानी तिरुवंतपुरम (त्रिवेन्द्रम) है। यह बहुत रमणीक और सुन्दर स्थान है। यहां स्वामी वरदराज का प्रसिद्ध विष्णु मंदिर है। विश्व-प्रसिद्ध कोवल्लम समुद्री बालू तट तिरुवंतपुरम के ही पास है। यहां से कुमारी को रेल और सड़क जाती है।

केरल में मकान बहुत साफ-सुथरे होते हैं। यहां धूल मिट्टी नहीं उड़ती। यहां गांव सड़कों के दोनों ओर मीलों तक चले गये हैं। यहां गांव की सीमा का पता नहीं चलता। बाहर का व्यक्ति इन लगातार फैले मकानों को एक ही समझेगा।

केरल बागानों का प्रदेश है। यहां खेतों के साथ ही घने बाग हैं। चावल आदि खेतों में तथा इलायची, जायफल, दाल-चीनी, काली मिर्च बगानों में पैदा की जाती है। यहां केले के बागान भी हैं। केले का प्रयोग यहां बहुत है।

यहां स्त्री-पुरुष लुंगी का प्रयोग करते हैं। स्त्रियां साड़ियां भी पहनती हैं। यहां के लोग मेहनती और कर्मठ हैं इस कारण लोक-कलाओं में भी प्रवीण हैं। कथकली केरल का लोक-नृत्य है। ओणम इनका लोक-पर्व है। ओणम के अवसर पर यहां नौका दौड़ होती है। यह यहां का प्रांतीय पर्व है। यह नौका दौड़ बहुत आकर्षक होती है।

भारत में केरल ही ऐसा प्रदेश है जहां साक्षरता सबसे अधिक है। यहां मिडिल कक्षाओं में हिंदी पढ़ाई जाती है। इस कारण केरल के लोग सारे भारत में नौकरियों पर मिलते हैं। केरल की नर्सें सारे भारत के अस्पतालों में फैली हैं। शिक्षित होने के कारण यहां भावात्मक एकता भी सबसे अधिक है। यहां हर गांव में गिरजा, मन्दिर और मस्जिद मिलेंगी।

केरल में प्राचीन मन्दिर भी हैं। तिरिशूर के पास गुरुवयूर का भगवान् कृष्ण का प्रसिद्ध मन्दिर है। इसी प्रकार पेरियार में राष्ट्रीय उद्यान है। कोचिन में भारत का प्राचीन गिरजा है। केरल भारत की एकता का प्रतीक है। हिन्दुस्तान की झांकी—चित्र केरल से समाप्त होता है। □□

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Acc. No. 11946
Date 12/3/92

Library IIAS, Shi
H 028.5 P 886 J
00077946